चित्र: कैरन हेडॉक

एक-सी और अलग-सी चीज़ें

कालू राम शर्मा

बीती रात से जमकर हो रही बरसात थमती दिख रही थी। स्कूल कैम्पस में काफी कीचड़ मच गया था। कीचड़ इस कदर का कि काली मिट्टी बच्चों और शिक्षकों के जूतों-चप्पलों में लग-लगकर कक्षा के बरामदे तक पहुँच गई थी। कक्षा के फर्श पर, छत से बरसात के पानी की बूँदें टपकने की वजह से, गोल-गोल गड्ढे बन चुके थे। दीवारों के सहारे-सहारे पानी आधी दीवार तक रिसकर आ चुका था। बच्चों के चेहरों पर खुशी झलक रही थी। खिड़की के बाहर का दृश्य काफी सुहाना था। ज़मीन हरियाली की चादर से ढक गई और आसमान धूसर रंग के बादलों से अटा पड़ा था।

पहला पीरियड खत्म हुआ और दूसरे पीरियड की घण्टी लग चुकी थी। बच्चे मास्साब के आने का इन्तज़ार कर रहे थे।

मास्साब रजिस्टर में लिखा-पढ़ी कर रहे थे। प्रधानाध्यापक बरामदे से लौटकर अपने कमरे में घुसे और मास्साब को टोका, "अरे, आप यहाँ क्या बैठे हो..! आपकी छठी की क्लास आग मूत रही है...। पहुँचकर धुलाई क्यों नहीं करते...!"

मास्साब ने जब यह सुना तो उनका मूड खराब हो गया। वे रजिस्टर को टेबल पर पटककर कक्षा की ओर चल दिए। वे मन-ही-मन सोच रहे थे, "क्या जवाब दूँ अब इनको...। पहले पीरियड से तो यहाँ कागज़ी काम करने को बिठाकर रखा है...।"

कक्षा की ओर जाते हुए मास्साब के गुस्से का पारा बढ़ता जा रहा था। वे गुस्से में इतना ही सोच पाए, "अगर ज़्यादा धमाल करते पाए गए तो आज तो एक-दो बच्चों पर हाथ साफ कर दूँगा।"

बच्चों को मास्साब के कक्षा में आने की खबर नहीं थी। कुछ आपस में बातें कर रहे थे और कुछ कंचे खेल रहे थे।

प्रधानाध्यापक की जली-कटी बातों को मास्साब भुला नहीं पा रहे थे। झुँझलाहट और झल्लाहट से लबरेज़ मास्साब ने एक नज़र बच्चों पर डाली। "क्या लगा रखा है ये सब! चुप रहने का नाम ही नहीं लेते। बन्द करो ये बकबक!"

बच्चे मास्साब के गुस्से को पढ़ नहीं पाए। सभी एक साथ बोले, "बाल विज्ञान पढ़ाओ।"

मास्साब का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुँच गया। "मुझे क्या करना है, ये अब तुम बताओगे! तुम लोग क्या मुझे बेवकूफ समझते हो..."

इस पर कुछ बच्चों ने 'यस मास्साब' कहा और कुछ ने 'नो मास्साब'।

क्यों मारें बच्चों को?

मास्साब सिर को टेबल पर टिकाकर, गुमसुम बैठ गए थे। कक्षा में सूई-पटक सन्नाटा पसर चुका था। मास्साब के दिमाग में कुछ विचार दौड़ने शुरू हुए। वे सोच रहे थे, "ये तो ऐसे ही चलता रहेगा...।" सोचते-सोचते वे विज्ञान की ट्रेनिंग के एक सत्र की याद में पहुँच गए जहाँ 'आखिर क्यों मारें बच्चों को?' विषय पर खुलकर चर्चा हुई थी। सत्र में कई शिक्षक-शिक्षिकाओं ने उन कारणों पर भी खुलकर चर्चा की थी कि स्कूलों में बच्चों पर जुल्म आखिर क्यों ढाए जाते हैं। कुछ ही शिक्षक-शिक्षिकाएँ बच्चों को दण्ड देने के पक्ष पर अड़े हुए थे। यही तर्क भारी लग रहा था कि बच्चों की पिटाई करना या उन्हें मानसिक यंत्रणा देना, इन्सानियत के खिलाफ है।

विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम का ताना-बाना कुछ इस प्रकार से बुना गया

चित्र: कैरन हेडॉक

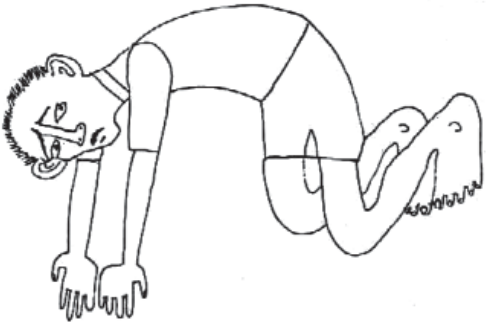

चित्र: कैरन हैडॉक

कि शिक्षक-शिक्षिकाओं को अपने विचार व्यक्त करने और उनको पोषित करने के पर्याप्त अवसर मिलें। बच्चों के बारे में बातें तो बड़ी-बड़ी की जाती रही हैं, मगर सही मायनों में उन पर अमल तभी किया जा सकता है जब ये शिक्षकों के दिल में बैठ जाएँ। वैसे तो वर्तमान परिप्रेक्ष्य में, किसी विषय के प्रशिक्षण में शिक्षा और बच्चों के नज़रिए पर चर्चा की गुंजाइश बनती नहीं है। मगर विज्ञान शिक्षण के इस प्रशिक्षण में विषय, शिक्षणशास्त्र और सामाजिक मसले आपस में इस कदर गुँथे होते थे कि कहाँ विषय की सीमा है और कहाँ से शिक्षणशास्त्र प्रारम्भ होता है, यह समझ पाना आसान नहीं होता था।

विज्ञान शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम की बदौलत मास्साब की सोच धीरे-धीरे बदल चुकी थी। उनकी सोच की तराजू का पलड़ा न मारने की तरफ झुकता जा रहा था। यही वजह थी कि विज्ञान से सक्रिय रूप से जुड़ने के बाद, मास्साब का बच्चों को मारना धीरे-धीरे कम हो गया था। इतना ही नहीं, उन्होंने अपने बेटे को भी पीटना बन्द कर दिया था।

मास्साब अब सोच रहे थे, "नाहक ही मैं बच्चों पर बरस पड़ा...।" उन्होंने सिर ऊपर उठाया और बोले, "अच्छा तो ऐसा करते हैं कि आज 'समूह' वाला पाठ पढ़ेंगे।"

मास्साब के रुख में नरमी को बच्चे भाँप रहे थे। बच्चों ने चुपचाप अपने बस्तों में से किताब-कॉपी निकाली और मास्साब के निर्देश का इन्तज़ार करने लगे।

मास्साब कुछ बोलते, इतने में पीरियड खत्म होने का ठोका लग गया।

***

अगले दिन, मास्साब ने प्रधानाध्यापक से चर्चा करके दूसरे और तीसरे पीरियड को मिलाकर विज्ञान का एक ही पीरियड कर लिया था। इस प्रकार तय यह किया गया कि सप्ताह में विज्ञान की कक्षा

तीन दिन चलेगी। बाकी के तीन दिन किसी दूसरे विषय को दो पीरियड दिए जाएँगे। इसके पीछे समझ यह थी कि जब विज्ञान में प्रयोग, चर्चा, परिभ्रमण आदि होंगे तो दो पीरियड की व्यवस्था ठीक होती है।

बच्चों ने जो फ्यूज़ बल्ब से लेंस बनाया था, वह उनके झोले में था। जब भी मौका मिलता, बच्चे कुछ-न-कुछ देख लेते। कक्षा में मास्साब आ चुके थे। उन्होंने देखा कि बच्चे अभी भी फ्यूज़ बल्ब की मदद से चीज़ों का अवलोकन कर रहे हैं।

मास्साब को आता देख डमरू ने धीरे-से कक्षा के बाकी बच्चों को सतर्क कर दिया, "ओय... मास्साब!"

मास्साब ने डमरू को यह कहते हुए सुन लिया था। पर आज वे सहज लग रहे थे। "कोई बात नहीं। लगे रहो बेटा।"

मास्साब के प्यार भरे लहज़े ने कक्षा में खुशहाली का वातावरण पैदा कर दिया।

"तो सबसे पहला काम क्या होगा विज्ञान की कक्षा में?" मास्साब को अचानक याद आया कि वे कुछ गड़बड़ कर रहे हैं। वे तुरन्त बाहर गए और जूते कक्षा के बाहर खोलकर आए। उन्होंने ऐसे पूछा मानो बच्चों को ही तय करना हो कि उन्हें क्या पढ़ना है।

रघु बोला, "टोली बनेगी।"

"हाँ... बिलकुल ठीक कहा। तो चलो फटाफट सभी अपनी-अपनी टोलियों में बैठ जाओ।"

कक्षा में कुछ देर के लिए हलचल हुई मगर जल्द ही माहौल एकदम शान्त हो गया। सभी बच्चे टोलियों में बैठ चुके थे। चार-चार की टोलियों में दो-दो बच्चे आमने-सामने बैठे थे।

समूह क्या होता है?

"चलो आज एक दूसरा काम करते हैं।" मास्साब ने कहा, "तो आज शुरुआत करते हैं समूह बनाना सीखने से। क्या होता है समूह? जानते हो?"

'समूह' शब्द बच्चों ने पहली बार सुना था। इस शब्द को बच्चों ने अपनी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में कभी इस्तेमाल नहीं किया था इसलिए उनकी समझ में कुछ भी नहीं आया। यही वजह थी कि बच्चों में इस शब्द के प्रति अनजानापन था। कक्षा के मूड को भाँपकर, माहौल को थोड़ा हल्का करने की कोशिश करने के लिए मास्साब बोले, "अरे, विज्ञान की कक्षा में इतना सन्नाटा किस बात का?"

मास्साब ने मन-ही-मन सोचा कि समूह का शाब्दिक अर्थ बताने से काम नहीं चलने वाला। बच्चों के साथ कुछ प्रक्रिया-गतिविधि करना ठीक रहेगा।

मास्साब ने बच्चों से कहा, "*बाल वैज्ञानिक* का पाठ-2 खोलें।" उन्होंने देखा कि 17 में से 4 बच्चों की किताबें

पुरानी हैं, और 10 बच्चे ऐसे थे जिनके पास किताब ही नहीं थी। दरअसल, प्रत्येक बच्चे के पास *बाल वैज्ञानिक* नहीं थी मगर प्रत्येक टोली में ज़रूर थी। तभी मास्साब को खयाल आया कि उनकी अलमारी में पिछले साल की कुछ किताबें रखी हुई हैं। अतः उन्होंने पुरानी *बाल वैज्ञानिक* बच्चों को दे देना उचित समझा।

"मैंने पाठ-2 खोला है।" मास्साब *बाल वैज्ञानिक* खोलकर सब बच्चों को दिखा रहे थे। उन्होंने पाया कि उनके सामने वाली टोली अभी भी पाठ नहीं खोल पाई है। मास्साब ने टोली की किताब ली व पाठ-2 खोलकर दे दिया। उसके बाद, उन्होंने बच्चों से पाठ की पहली दो लाइनों को पढ़ने और समझने के लिए कहा।

मास्साब के कहने पर बच्चे अपनी-अपनी टोलियों में पढ़ने लगे। वहीं, मास्साब कुछ देर तक, धैर्य के साथ, बच्चों के पढ़ने का अवलोकन कर रहे थे। उन्होंने पाया कि बच्चे पढ़ नहीं पा रहे हैं।

अब मास्साब ने किताब में से पढ़ा, "तुम रोज़ कई चीज़ें देखते हो, उन्हें काम में भी लेते हो। हर चीज़ को तुम अलग-अलग पहचान लेते हो क्योंकि इन चीज़ों में अन्तर होते हैं।..."

"तो समझ में आया?"

बच्चों ने एक साथ जवाब दिया, "हाँ...।"

"तो अब तुम सबको क्या करना है?"

भागचन्द्र कहने लगा, "हाँ मास्साब, हम पहचान लेते हैं।"

"अच्छा, तो तुम अपने आसपास की ढेर सारी चीज़ों को पहचानते हो। जैसे कि...।"

"गाय, बकरी, चूहा, टेबल, पेन, पेंसिल... ।" बच्चे कई चीज़ों के नाम बताए जा रहे थे।

मास्साब ने सटीक टिप्पणी की, "वेरी गुड!"

सिलसिला अन्तर का

किताब में लिखे अनुसार, बच्चों को अलग-अलग टोलियों में दो-दो चीज़ें देते हुए मास्साब ने कहा, "अब इनमें दिखने वाले दो अन्तर बताना है।"

बच्चे चीज़ों को उलट-पलटकर देखने में व्यस्त हो गए।

मास्साब ने फिर से पूछा, "बताओ भई, इनके बीच क्या अन्तर है?"

कक्षा में फिर सन्नाटा पसर गया था। बच्चों को अन्तर पता थे मगर असल समस्या यह थी कि वे बता नहीं पा रहे थे। मास्साब ने टोलियों में बैठे बच्चों पर नज़र डाली, पर बच्चे मास्साब से नज़रें चुरा रहे थे, और जब नज़र-से-नज़र मिलती तो बच्चे नज़रें झुका लेते। मास्साब ने बच्चों को पुकारकर पूछना ही उचित समझा। भागचन्द्र पर नज़र पड़ी, मगर उसने नज़रें चुरा लीं।

केशव घबराकर बोला, "मास्साब... समझ में नहीं आया।"

इस बार मास्साब ने कक्षा की एकमात्र लड़की, नारंगी की ओर इशारा किया और बोले, "ऐ तुम... हाँ बोलो!"

नारंगी सीधे हाथ में पेंसिल पकड़े थी और बाएँ हाथ में पेन। नारंगी बोली, "पेन प्लास्टिक का बना है। ...पेंसिल लकड़ी की।"

"शाबाश! और किसी को कुछ कहना है?" मास्साब ने कक्षा से पूछा।

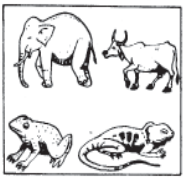
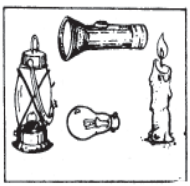
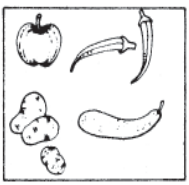
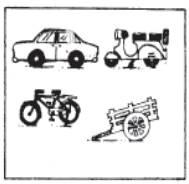

नारंगी की टोली में से ही रघु ने हाथ खड़ा किया, "मास्साब!"

"यस!" मास्साब ने खुश होकर रघु को बोलने को कहा।

"पेंसिल में क्लिप नहीं है। पेन में क्लिप है।"

"वेरी गुड... एकदम सही कहा! पेन में क्लिप होता है।" उन्होंने अपनी जेब से पेन निकालकर बताया, "इस क्लिप की मदद से पेन को जेब में रख पाते हैं। जब हम झुकते हैं तो पेन गिरता नहीं है।" मास्साब के चेहरे पर खुशी छलक रही थी। मास्साब को खुश देखकर अन्य टोलियों के बच्चों का आत्मविश्वास बुलन्दियों पर पहुँच गया।

भागचन्द्र को शुरुआत में समझ नहीं आया था कि आखिर कहना क्या है। जब उसने नारंगी और रघु के जवाब सुने तो समझ में आया कि मास्साब पूछना क्या चाह रहे हैं। भागचन्द्र अब हिम्मत जुटाकर बोला, "...मास्साब...पेन में सई (स्याही) डालनी पड़ती है। पेंसिल में नहीं डालनी पड़ती।"

भागचन्द्र बैठा भी नहीं था कि डमरू जोश में खड़े होकर बोला, "पेन का ढक्कन होता है। पेंसिल का ढक्कन नहीं होता।"

मास्साब अपनी दोनों हथेलियों को आपस में रगड़ते हुए बोले, "तो चलें, अब समानताएँ देखें।"

मास्साब टोलियों से जवाब का इन्तज़ार कर रहे थे। तभी पीरियड की घण्टी बजी, और बच्चे विज्ञान की किताब बन्द करने लगे मगर मास्साब ने कहा कि एक पीरियड और पढ़ेंगे।

मास्साब ने फिर से दोहराया, "जो

चीज़ें तुम लोगों को दी हैं, उनमें समानता बतानी है।" इतना कहने की देर थी कि कक्षा में कई सारे हाथ खड़े हो गए। हर कोई कुछ कहने को उतावला दिख रहा था। अब पेन व पेंसिल में समानता की झड़ी लग चुकी थी।

विज्ञान किट से रू-ब-रू

अगली गतिविधि प्रारम्भ करने की तैयारी मास्साब के दिमाग में बनी हुई थी। वे कक्षा से बाहर निकले और बच्चों से बोले, "चलो, दो-तीन होशियार बच्चे मेरे साथ आ जाओ।"

मास्साब के इस कथन पर मानो पूरी कक्षा ही बाहर आने को थी। दरवाज़े पर भगदड़ मच चुकी थी। हर कोई मास्साब के साथ जाने को उतावला हुआ जा रहा था। मास्साब को आखिर कहना पड़ा, "समझ गया... सभी समझदार हो... देखो, मैंने दो-तीन बच्चों को आने का कहा है।"

इस बार भी वही हाल हुआ जो पहली बार मास्साब के कहने पर हुआ था। मास्साब ने सभी बच्चों को कक्षा के अन्दर कर दिया। अब उन्होंने बच्चों के नाम पुकारे, "हुँह... चन्दर, इसरार, विष्णु। बस... आ जाओ...।"

थोड़ी देर बाद तीनों बच्चे अपने हाथों में सामान लेकर कक्षा में लौट रहे थे। इनमें से अधिकांश सामग्री ऐसी थी जो बच्चे पहली बार देख रहे थे। यही वजह थी कि बच्चे न तो उनके नाम जानते थे, न ही काम।

मास्साब कक्षा में आ चुके थे और सभी बच्चे एक गोले में बैठ चुके थे। चीज़ों को कक्षा के बीचों-बीच रखा जा चुका था। मास्साब चीज़ों को उठा-उठाकर बच्चों को दिखाए जा रहे थे। वे बोले, "देखो... इन सभी चीज़ों को अच्छे से जान लो। ठीक...।" अब की बार उन्होंने अपनी बाईं ओर बैठे रघु को काँच की एक लम्बी-सी बेलनाकार चीज़ देते हुए कहा, "जानते हो इसका नाम क्या है?" रघु ने कोई जवाब नहीं दिया। मास्साब ने कहा, "ये परखनली है।"

रघु परखनली को उलट-पलटकर देख रहा था। उसने परखनली के मुँह पर फूँक मारी और कुछ परखना चाहा। इधर मास्साब ने दूसरी चीज़ रघु की ओर बढ़ा दी थी। इस वजह से उसे परखनली अपने पास बैठे इसरार को देनी पड़ी। इस तरह से चीज़ें इसरार से भागचन्द्र, नारंगी, विष्णु, डमरू, चन्दर, केशव... के बीच सफर कर रही थीं।

जब बच्चों ने विज्ञान की किट सामग्री को देख लिया तो मास्साब एक साँस में बोले, "अब हम एक तालिका बनाएँगे और समूहीकरण करेंगे।"

तालिका उर्फ डब्बा

मास्साब ने चॉक उठाई और बोर्ड पर एक बड़ा-सा खाना बनाया। बड़े खाने में फिर और छोटे-छोटे खाने बनाए। ऐसे उन्होंने एक साँस में

क्रमांक	समूह का नाम	समूह में आने वाली चीज़ें
1	काँच की चीज़ें	
2	लकड़ी की चीज़ें	
3	प्लास्टिक की चीज़ें	
4	आर-पार दिखने वाली चीज़ें	
5	गोलाकार चीज़ें	
6	पानी पर तैरने वाली चीज़ें	

तालिका बना दी। बच्चे अपनी कॉपी में तालिका को ठीक से नहीं बना पा रहे थे। दरअसल, बच्चों के लिए कॉपी में तालिका बनाने का यह पहला अवसर था। बोर्ड पर तालिका बनाकर मास्साब इन्तज़ार कर रहे थे कि बच्चे भी बना लें, फिर बातचीत शुरू करें।

उन्होंने देखा कि बच्चे तालिका बनाने की कोशिश तो कर रहे हैं मगर समस्या तो लिखने की भी है। बच्चे न केवल पढ़ने में बल्कि लिखने में भी कमज़ोर हैं। मास्साब सोच रहे थे, "इस मुसीबत से कैसे निपटा जाए?"

टोलियों में बैठे बच्चे तालिका बनाने के चक्कर में कॉपी के कई पेज बिगाड़ चुके थे। वे पन्ने-दर-पन्ने फाड़ते जा रहे थे, मगर सही तौर पर तालिका नहीं बन पा रही थी।

इसरार हिम्मत जुटाकर बोला, "मास्साब, यह डब्बा नहीं बन रहा...।"

मास्साब ने इसरार के मुँह से जब 'डब्बा' सुना तो उन्होंने तय कर लिया कि भले ही किताब में तालिका लिखा हो, मगर वे अब डब्बा ही बोलेंगे। उन्होंने जो तालिका बोर्ड पर बनाई थी, उसे कपड़े से मिटाते हुए निर्देश दिया, "अच्छा तो ऐसा करते हैं कि पहले एक बड़ा डब्बा बनाओ।" यह कहते हुए मास्साब ने बोर्ड पर एक बड़ा-सा डब्बा बनाया।

टोलियों ने भी अपनी-अपनी कॉपी में एक बड़ा-सा डब्बा बना लिया था। अब मास्साब ने बड़े डिब्बे में दो खड़ी लाइनें खींचीं। इस तरह से बड़े डब्बे में तीन डब्बे बन गए। इन तीन डब्बों में से दाएँ हाथ की ओर वाले दो डब्बे लगभग बराबर थे, मगर बाएँ हाथ वाला डब्बा सँकरा। अब मास्साब ने डब्बे में छह आड़ी लाइनें खींचीं। बच्चों ने, मास्साब का अनुसरण कर, यह काम भी बखूबी कर लिया था।

मास्साब ने बोर्ड के बगल में खड़े

होकर चॉक से सने हाथ झटकारते हुए पूछा, “तो सबने कर लिया इतना?”

अब मास्साब ने सबसे ऊपर के आड़े खानों में से बाईं ओर के सँकरे खाने में ‘क्रमांक’ लिखा, फिर उसके दाईं ओर वाले में ‘समूह का नाम’ और उसके पास वाले खाने में लिखा ‘समूह में आने वाली चीज़ें’।

चित्रः रंजीत बालमुचु

मास्साब सोच रहे थे कि तालिका बनाने में इतना समय चला गया तो समूहीकरण की समझ कब विकसित होगी। झट-से उनके दिमाग में आया कि तालिका बनाना भी तो एक हुनर है। अगर तालिका का खाका खींचना आज नहीं सीख पाए, तो आगे इससे कैसे पार पाएँगे। वे धैर्यपूर्वक इन्तज़ार कर रहे थे। इन्तज़ार करते-करते, वे एक बार फिर उस प्रशिक्षण की जीवन्त कक्षा की याद में पहुँच गए जहाँ समूह की अवधारणा को समझने के लिए घण्टों तक बेबाक बहस, तर्क-वितर्क चला था। वे सोच रहे थे कि आखिर इन बच्चों के बीच वैसा वातावरण कैसे बनाया जाए। हालाँकि, वे यह जानते थे कि किताब में इस प्रकार की बहस का कोई ज़िक्र नहीं, यह तो उस प्रशिक्षण के स्रोत सदस्यों की ही खूबी थी।

बातों-बातों में समूहीकरण

अब तक बच्चों ने तालिका बनाने का काम पूरा कर लिया था। मास्साब अभ्यास पढ़कर कक्षा में चर्चा का माहौल बनाने की योजना बना रहे थे। वे मुस्कराते हुए बोले, “..ऐसा करते हैं कि हम अब कुछ बातें करते हैं।”

बच्चों ने जब यह सुना तो नारंगी अपने पास बैठे रघु के कान के पास मुँह ले गई और बुदबुदाई, “आज मास्साब खुश हैं...।”

मास्साब ने नारंगी की हरकत को देख लिया मगर उसने रघु के कान में क्या कहा, यह उनके लिए पहेली ही थी। मास्साब ने रघु से पूछा, "क्यों भई, तुम्हें क्या कह रही है नारंगी?" रघु सोच रहा था कि अगर सच बता दिया तो नारंगी गुस्सा हो सकती है। इसलिए उसने हाज़िर जवाब दिया, "वो... पेन माँग रही है।"

मास्साब ने बच्चों से कहा, "अच्छा तो अभी पेन वगैरह को रख लो अपने बस्ते में। मैं जो कहता हूँ उसे सुनो। ऐसा करो कि पूँछ वाले दस जानवरों के नाम बताओ।" हर कोई उतावला हो रहा था बताने को। मास्साब ने तो दस नाम पूछे थे मगर बच्चों की ओर से दुगने नाम आ चुके थे। वे बच्चों से इसी तर्ज़ पर सवाल करते और बच्चे फटाफट जवाब देते जाते। मास्साब बोर्ड पर लिखते जा रहे थे। बोर्ड पूरा भर चुका था।

अब मास्साब ने बच्चों से कुछ और सवाल पूछने का बीड़ा उठाया, "तो बताओ कि तवा किसमें आएगा?"

भागचन्द्र बोला, "तवा... गोल में।"

इसरार बोला, "...मास्साब, बोर्ड पर गोल चीज़ तो है ही नहीं।"

मास्साब बोर्ड की ओर देखकर बोले, "हाँ... करेक्ट। हम गोल चीज़ों की बात करते तो तवा तो आता न इस ग्रुप में।"

रघु ने अपनी टोली में पहले विचार रखे, "तवा लोवे (लोहे) का है।"

टोली के बाकी सदस्यों ने रघु को बोला, "खबर है...। बोल दे। तू नहीं बोले तो फिर हम बोलेंगे।" रघु फट-से खड़ा हुआ और उसने बोला, "तवा लोहे का है।"

"अच्छा, अब बताओ मेंढक पूँछ वाले समूह में आएगा कि नहीं?" मास्साब पीछे की ओर बैठी टोली से मुखातिब हो रहे थे।

टोली में बच्चे आपस में विमर्श कर रहे थे। "हाँ... डेंडक का ही पूछ रहे हैं।" बच्चे समझ चुके थे कि मास्साब, दरअसल, मेंढक यानी कि उनकी अपनी भाषा में डेंडक का ही ज़िक्र कर रहे हैं। टोली में से इसरार खड़ा हुआ और उसने कहा, "नहीं, मास्साब! डेंडक तो बिना पूँछ वाला है।"

डेंडक का अचार

भागचन्द्र कहने को कुलबुला रहा था। वह कुछ कहने को उठा तो सही मगर संकोच आड़े आ रहा था। मास्साब ने भागचन्द्र समेत पूरी कक्षा के बच्चों को आश्वस्त किया, "अरे भई, बोलना हो तो बोल दो। जो भी कहना चाहो, बेझिझक कह सकते हो।"

भागचन्द्र ने हिम्मत जुटाई और बोला, "मास्साब, डेंडक का तो अचार बनाकर खाते हैं।"

भागचन्द्र की बात सुनकर पूरी कक्षा अचरज कर रही थी। मास्साब को भी मेंढक के अचार वाली बात ने

अचरज में डाल दिया था। दरअसल, मास्साब ने भी कहीं यह पढ़ा तो था इसलिए वे कुछ देर तक सोचते रहे। फिर अचानक बोले, "अभी हम मेंढक की पूँछ की बात कर रहे हैं। जो तुमने देखा है मेंढक में, वो बताओ।"

भागचन्द्र कुछ और कहना चाह रहा था, "...मास्साब, उन्दरे (चूहे) भी खाते हैं।"

मास्साब भागचन्द्र की बात को टालना चाह रहे थे।

मास्साब मेंढक और चूहों के खाने वाले मसले पर कुछ ज़्यादा कहने की स्थिति में नहीं थे। वे समूहीकरण पर अटके हुए थे। वे सोच रहे थे कि अगर इधर-उधर की बात की तो समूहीकरण एक तरफ धरा रह जाएगा।

बहरहाल, मास्साब ने भागचन्द्र और बाकी बच्चों को आश्वस्त किया, "खाने-पीने की बात तुम भोजन वाले पाठ में जी भरकर करना।"

मास्साब की चिन्ता

मास्साब जिस समस्या से जूझ रहे थे, वह यह कि समूहीकरण की अवधारणा किस तरह बच्चों के दिमाग में बिठाई जाए। बच्चे गतिविधि के तौर पर तो समूहीकरण कर पा रहे थे, मगर उन्हें गुणधर्म चुनने में काफी दिक्कतें हो रही थीं। मास्साब सोच रहे थे कि आखिर इस समस्या को कैसे हल किया जाए। बच्चे एक-एक चीज़ के गुण तो बखूबी बता देते, मगर जब कई सारी चीज़ें एक साथ होतीं तो उनको एक गुणधर्म में बाँधने का कौशल विकसित नहीं हुआ था।

मास्साब चिन्तित थे। वे जानते थे कि समूहीकरण बाल विज्ञान की एक मूल अवधारणा है। अतः इस चुनौतीपूर्ण अवधारणा पर गहराई-से काम करने की आवश्यकता है। फिर उन्हें ध्यान आया कि आगे के लगभग सभी पाठों में समूहीकरण तो होगा ही। सो, उन्होंने तय किया कि आगे समूहीकरण के कौशल को और बेहतरी से विकसित करने की कोशिश करनी होगी।

...जारी

कालू राम शर्मा (1961-2021): अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन, खरगोन में कार्यरत थे। स्कूली शिक्षा पर निरन्तर लेखन किया। फोटोग्राफी में दिलचस्पी। *एकलव्य* के शुरुआती दौर में धार एवं उज्जैन के केन्द्रों को स्थापित करने एवं मालवा में विज्ञान शिक्षण को फैलाने में अहम भूमिका निभाई।

चित्र: कैरन हैडॉक एवं रंजीत बालमुचु।